# ।। अधीरजता को अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

**|| अथ अधीरजता को अंग लिखंते ||**

**कन्या बेचे मोल कर || पइशा लेहे बजाय ||**
**के परणे के ब्याज ले || वो धन खर्चे खाय ||**
**वो धन खर्चे खाय || जके महा पापी होई ||**
**मुख दीढारो पाप || बेद सायद में जोई ||**
**सुखराम दास वे इक रंगा || ज्याहाँ त्याहाँ फूले आय ||**
**किन्या बेचे मोलकर || पइसो लेहे बजाय || १ ||**

इस मनुष्य प्राणीके जैसा अधीर कोई भी नही है । इसके पास कितना भी धन हो गया तो,भी इसे धैर्य नही आता है । दूसरे सभी प्राणी एक बार अपना पेट भर जाने पे,दूसरी बार पेट भरने की फिकर नही करते है । दूसरे सभी प्राणी सिर्फ एक बार पेट भरने के लिए अधीर रहते है परन्तु मनुष्य प्राणी को कितना भी हो जाने पर धैर्य नही आता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि यह मनुष्य प्राणी अपनी लड़की को जिसे कन्या रत्न ऐसा कहते है ऐसी लड़की को कीमत ठहरा कर बेच देता है और उस लडकी का बजाकर पैसा लेता है और उस पैसे से फिर वह शादी करता है या वो रूपये वह ब्याज से देता है । ऐसा उस लड़की के बेचनेसे प्राप्त हुआ धन को खर्च करता है और खाता है।(लड़की को बेचकर उसका पैसा लेना यह उस लड़की का मांस बेचकर पैसा लेना है । उस लड़की के मांस से आये हुए पैसे खाना, यानी उस लड़की का मांस खाने जैसा है और उस लड़की के मांस के आये हुए पैसे और उससे खरीदा गया अन्न,घर का या कोई बाहर का भी खायेगा तो,भी उस लड़की का मांस खाने जैसा है । उस पैसे से कोई सामान खरीदा तो वह भी उस लड़की का मांस ही है, कारण यह कीमत उस लड़की के मांस की थी ।) आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है, कि वो लड़की के मांस खानेवाले महापापी हैं । इतना बड़ा पाप दूसरा कोई भी नही है । दूसरे पापीयों का मुख देखनेसे पाप नही लगता है परन्तु लड़की बेचनेवाले का मुख देखनेसे पाप लगता है ऐसी वेदो में साक्ष है । इसी पर एक दृष्टांन्त:–(एक रजस्वला चांडालीन कुत्ते का पकाया हुआ मांस,सिरपर लेकर रास्ते से जा रही थी । वह रास्ते पर चलते हुए पानी छिड़कते जाती थी । एक मुसाफिर ने उससे पूछा,की तेरे पास सभी अमंगल है,तू चाण्डालिन है,उसमें रजस्वला है और सिरपर कुत्ते का पकाया हुआ मांस,तू पानी छिड़क कर क्या शुद्ध कर रही है । तेरे से अधिक दूसरा क्या अशुद्ध हो सकता है?ऐसा वह मुसाफिर बोला तब वह चाण्डालिन बोली,कि कोई कन्या का पैसा लेनेवाला इस रास्ते से गया होगा उससे यह रास्ता अशुद्ध हो गया है । वह मेरी अपेक्षा कई गुना अशुद्ध है । इसलिए मै पानी छिड़क रही हूँ ।)आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि वे एक रंगी दूसरे जैसे ही जहाँ तहाँ आकर फूले हुए रहते है । परन्तु आगे कौन से नर्क मे जाना पड़ेगा,यह उन्हें मालुम

नही ।। १ ।।

कवत्त ।।

**लगी पेट की दाय ।। ओर सूझे नहिं काई ।।**
**तीन लोक नर नार ।। आपदा रहया संभाई ।।**
**सिध पीर अवतार ।। सरब माया सुं लागा ।।**
**ब्रम्हा बिस्न महेस ।। ईस लग गर्भ न भागा ।।**
**माया बड़ी बलाय हे ।। काउ नहिं जीती जाय ।।**
**केईक जन सुखराम के ।। जीत गया जुग माय ।। २ ।।**

अरे इनको पेटकी आग लगी हुयी है,इनको दूसरा कुछ भी सूझता नही है । अपने पेटके लिए, अपने ही पेट की लड़की बेच डालते हैं । लड़की बेचे नही होते तो ये क्या भुखे रहते थे । इन्हें इतना भी नही सूझा की पेटके लिए अपनी लड़की कैसे बेचू ?पेट के लिए ऐसा क्या चाहिए? दिनभर के लिए आधा किलो अन्न)इनको दूसरा कुछ भी सूझता नही । तीनो लोक के स्त्री पुरूष आपदा पकड़कर बैठे हैं। दूसरा कोई भी प्राणी,दूसरे समय की चिन्ता करके संग्रह कुछ भी नही करता है परन्तु मनुष्य के पास कितना भी होगा तो भी धैर्य नही आता है । मनुष्य प्राणी ऐसा अधीर है।)संसार के चोरासी सिध्द और चौविस पीर तथा दस या चौवीस अवतार, ये सभी माया से लगे हुए हैं । अधिक तो क्या ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,इन तीनों को लोग ईश्वर कहते हैं परन्तु इनका भी भ्रम गया नही है । यह माया बहुत बड़ी बलाय है । यह माया किसी से भी जीती नही जाती है । परन्तु आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि अनेक संत संसार मे से माया को जीतकर माया के पार गये है । ।।२।।

सवईयो इंद व छंद ।।

**पैसो भयो जब टके की आसा ।। टके सें दोय टका मन भावे ।।**
**दोय सूं चार हुवा जब राजी ।। रिपिये ऊपर सुरत लगावे ।।**
**रिपियो आन मेले जब कोई ।। पाच पचीस की गाँठ जुं चावे ।।**
**पाँच ज्युँ पाँच पचीस हुवा ।। सेकड़ां ऊपर मन दौडावे ।।**
**सेंकडा पांच मिले कुछ जाफा ।। सेंस कूं छोड़ लाखा मन जावे ।।**
**लाख जसात सताईस होई ।। अडबा खड़बा मन दोडावे ।।**
**अडबा खडबा होय लिला संख ।। असंखा माया जु चावे ।।**
**अे तो हु धन मिले तब आई ।। भूप ज हो न की प्यास लगावे ।।**
**भूप से भूप होउ कुछ जाफा ।। दीन दुनिपे पातशा कुवाई ।।**
**पातशा होय रहे मन आगो ।। इन्द्रासन मे इंद हुं जाई ।।**
**तोही यो मन रहे दिल आगो ।। ब्रम्हा जुं होन की प्यास लगाई ।।**
**मन की भूख कहे सुखदेव जी ।। बिना संतोष मिटे नहि भाई ।।३।।**

मनुष्य के पास सर्व प्रथम एक पैसा हुआ,फिर दो पैसे की आशा करता है की एक पैसा और हो जानेपर मेरे पास पैसे की जोड़ी हो जायेगी । दो पैसे हो जानेपर,एक आना होना चाहिए, ऐसा मन मे आता है और एक आना होने पर खुश होता है फिर रूपये की तरफ ध्यान लगाता है कि रूपया हो जाना चाहिए फिर रूपया हो जाने पर कहता है पांच रूपये हो जाते तो अच्छा होता,पांच रूपये हो जाने पर कहता है,पच्चीस हो जाने पर गठरी बांध कर रखूंगा ऐसी चाहना करता है । पच्चीस हो गये तो फिर सैकड़े के उपर मन दौड़ता है और सौ हो जाने पर पांच सौ,पांच सौ हो जाने पर और भी कुछ अधिक होना चाहिए,फिर हजार को छोड़कर,लाख हो जानेपर,सत्ताइस लाख होना चाहिए,फिर अरब पर मन दौड़ता है । तो भी धैर्य कुछ भी नही आता)फिर खरब,शंख हो जाने पर असंख्य माया चाहता है परन्तु धैर्य कुछ आता नही है । इतना धन मिल जानेपर फिर राजा होने की प्यास लगती है । राजा हो जानेपर फिर बड़ा राजा होना चाहिए,फिर बड़ा राजा हो जानेपर मुझे दुनिया का बादशाह कहना चाहिए,सारी दुनिया का बादशाह हो गया,तो भी मन आगे ही जाता है कि मै इन्द्रासन लेकर,इन्द्र होकर,तैतीस कोटि देवताओं का राजा हो जाना चाहिए । इन्द्र भी हो जानेपर और भी मन आगे ही जाता है,कि मै ब्रम्हा होना चाहिए,ऐसी ब्रम्हा होनेकी प्यास लगती है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इस मनकी भूख,संतोष के बिना किसी से भी नही मिटती है । ।।३।।

**।। इति अधिरजता को अंग संपूरण ।।**